

॥ ॐ प्रणव रुपिणीम् वन्दे ॥

अ.क्र.१०५

मंगल की सेवा । सुन मेरी देवा । हात जोड तेरे द्वार खडे ।  
पान सुपारी । ध्वजा नारीयल । ले ज्वाला तेरी भेट धरे ।  
सुन जगदंबे । कर न विलंबे । संतन के भंडार भरे ।  
संतन प्रतीपाली । सदा खुशाली । जय काली कल्याण करे .....॥ धृ ॥

बुद्धि विधाता । तू जगमाता । मेरा कारण सिद्ध करे ।  
चरण कमलका । कीया आसरा । शरण तुम्हारी आन पडे ।  
जब जब भिड पडे । भक्तनपर । तब तब आप सहाय करे ।  
संतन प्रतीपाली .....॥ १ ॥

बार बार तै । सब जग मोही । तरुणिरुप अनुपम धरे ।  
माता होकर । पुत्र खिलावे । भार्या कही भोग धरे ।  
संतन सुखदायी । सदाखुशाली । संत खडे जयजयकार करे ।  
संतन प्रतीपाली .....॥ २ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश । फल लिये । भेट देन तेरे द्वार खडे ।  
अटल सिंहासन । बैठे भवानी । शिर सोनेका छत्र धरे ।  
वार शनिश्चर । कुंकुम बरणी । जब लुंकन हुकूम करे ।  
संतन प्रतीपाली .....॥ ३ ॥